योगानंद जी पर डाक टिकट जारी

नयी दिल्ली. योगदा सत्संग शताब्दी के उपलक्ष्य में परमहंस योगानंद जी की 65 वीं महासमाधि दिवस पर प्रधानमन्त्री नरेंद्र मोदी ने भारतीय सरकार की ओर से डाक टिकट का विमोचन किया। तत्पश्चात प्रधानमन्त्री जी ने श्री श्री मृणालिनी माँ को प्रणाम किया।

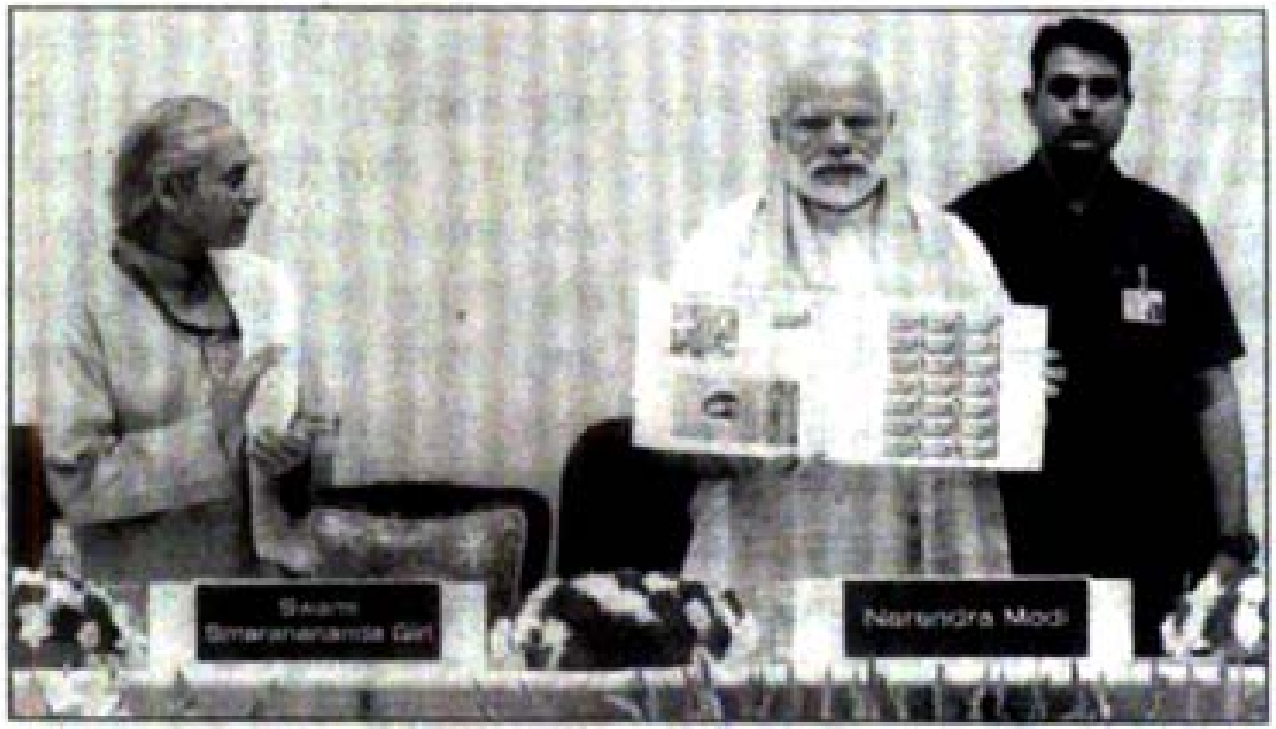

मोदी जी ने कहा की 95% लोग इस महान योगी जी की आत्मकथा को पढ़ सकते हैं किन्तु क्या कारण होगा कि बिना भारत देश और यहां के पहनावे के बारे में जाने दुनिया भर के लोग इस पुस्तक को अपनी मातृभाषा में लिखकर जन जन तक पहुँचाना चाहते हैं। यह प्रसाद बांटने के समान है जिसे बांटने में आध्यात्मिक सुख की अनुभूति होती है। एक ऐसा वर्ग भी है जो यह मानता है की जीवन में जो है सो है कल को किसने देखा। कुछ लोग ऐसे भी हैं जो मुक्ति चाहते हैं। लेकिन योगी जी की यात्रा को देखें तो वहां अंतर यात्रा की चर्चा है भीतर जाने की एक मंगल और अविरत यात्रा। इस यात्रा को सही गति एवं गंतव्य देने के लिए हमारे ऋषियों और मुनियों ने महान यो-गदान दिया है। इसी परंपरा को योगी जी ने आगे बढ़ाया। कभी कभी हठ योग को बुरा माना जाता है लेकिन योगी जी ने इसकी सकारात्मक व्याख्या की है और क्रिया योग की तरफ प्रेरित किया है जिसके लिए शरीर बल की नहीं अपितु आत्मबल की आवश्यकता होती है। यह योगी जूते पहनकर माँ भारती का स्मरण करते हुए इस दुनिया से जाना चाहते थे।